Deepdaan Importance

दीपदान पूजा विधि

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

देवता को प्रसन्न करते हेतु हमारे शास्त्रों में ऋषियों मुनियों द्वारा निर्देशित पूजा के कई विधान उपस्थित हैं। जिसमें जिसकी रूचि हो अथवा जो मनुष्य जिसे करने में सक्षम हो वह उसी प्रकार से अपने आराध्य देवता को प्रसन्न करे। इन विधानों में एक सरल, गुप्त एवं शीघ्रफलप्रदाता विधान है- दीपदानव्रत। जिसका एक संक्षिप्त एवं सरल विधि में वर्णन कर रहा हूं। दीपदानव्रत अथवा दीपदानतंत्र- अर्थात् कामनानुसार निश्चित संख्या और अवधि में दीपक प्रज्ज्वलित कर उन्हें देवता के समक्ष अर्पित करना। इसके अतिरिक्त प्रत्येक पूजा में भी दीपक प्रज्ज्वलित कर उसमें भैरवजी का ध्यान करते हुए उन्हें पूजाकर्म का साक्षी मानकर देवता की आराधना की जाती है, इसलिये दीपक को कर्मसाक्षी भी कहा जाता है। दीपदान करने से अज्ञानरूपी आवरण का नाश होकर प्राणी में ज्ञान का उदय होता है। सकाम और निष्काम दोनों ही प्रकार से इस अनुष्ठान को सम्पन्न किया जा सकता है।

दीपदान अनुष्ठान का पुराणों एवं शास्त्रों में कई स्थानों पर वर्णन मिलता है। 'श्रीमद्देवीभागवत्' में धर्मराज ने सावित्री को जो उपदेश दिये थे, उनमें दीपदान के विषय में धर्मराज ने कहा

है- कि 'जो देवताओं के निमित्त दीपदान करता है, वह अग्निलोक में निवास करता है।' 'अग्निपुराण' में अग्निदेव कहते हैं- कि 'जो मनुष्य देवमन्दिर में दीपदान करता है, वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है। चातुर्मास्य में श्रीहरि के निमित्त दीपदान करने वाला विष्णुलोक और कार्तिक मास में दीपदान करने वाला स्वर्गलोक को प्राप्त करता है। दीपदान से बढ़कर न कोई व्रत है, न था और न होगा। दीपदान के प्रभाव से आयु और नेत्रज्योति में वृद्धि होती है, धन और पुत्रादि की भी प्राप्ति होती है। दीपदान करने वाला सौभाग्ययुक्त होकर स्वर्गलोक में देवताओं द्वारा पूजित होता है।' 'भविष्यपुराण' के ब्राह्मपर्व में भी दीपदान की महिमा का वर्णन आता है। दीपदान के प्रभाव से ही यज्ञदत्त के पुत्र गुणनिधि को कुबेरपद की प्राप्ति हुई थी।

देवता की प्रसन्नता एवं दुर्भाग्य के निवारण के लिये दीपदानव्रत एक उत्तम प्रयोग है। जिस प्रकार साधक उत्तम भक्ति सहित देवता के समक्ष दीपमालारूपी प्रकाश की व्यवस्था करता है, उसी प्रकार देवता भी साधक के जीवन से अन्धकार रूपी दुःखों का नाश कर सौभाग्य प्रदान करते हैं। विशेषतः शत्रुबाधा या प्रेतबाधा प्रबल होने की परिस्थिति में मंत्र जप के साथ माता काली या भैरवजी के समक्ष दीपदान करने से त्वरित लाभ होता

है। होली, विजयदशमी, दीपावली, नवरात्र, अमावस्या, पूर्णिमा, अष्टमी, नवमी अथवा महारात्रियों में यह विधान कर सकते हैं। महाविपत्ति उत्पन्न होने पर कालादि का शोधन नहीं किया जाता। कुछ वर्ष पूर्व कठिन परिस्थिति में मैंने रात्रिकाल में एक ही समय में 1008 दीपक भगवती के समक्ष प्रज्ज्वलित किये थे (ऊपर चित्र में)। भगवती की कृपा से तत्काल समस्या का निवारण हुआ था। अन्य भी कई सफल अनुभव प्राप्त हैं। किसी अनुष्ठान को पूर्ण करने के पश्चात् देवता की प्रसन्नता के लिये भी इसका आयोजन कर सौभाग्य प्राप्त किया जा सकता है।

विधि– परिस्थिति और अपनी शक्ति के अनुसार ही दीपक की संख्या निर्धारित की जाती है। अपनी सामर्थ्यानुसार 11, 21, 31, 41, 51 अथवा 108 दीपक निर्धारित समय (जैसे एक पक्ष या एक माह) तक नित्य देवता को समर्पित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त एक विस्तृत, परन्तु प्रभावी विधान यह भी है– कि 1008 दीपकों को एकत्रित कर एक समय में ही देवता के समक्ष प्रज्ज्वलित करना। इसमें देवता को अर्पित दीपक की संख्या के अतिरिक्त 3 दीपक प्रारम्भ में अधिक प्रज्ज्वलित करें। इनमें पहला अपने गुरुदेव का, दूसरा गणपतिजी का और तीसरा भगवान् भैरव को अर्पित करें।

शत्रुबाधा, अभिचारिक कर्म, शारीरिक रोग, राजबन्धन अथवा अन्य विकट संकट से निवारण हेतु सरसों के तेल में एक लोंग का जोड़ा रखकर प्रत्येक दीपक प्रज्ज्वलित करें। आर्थिक लाभ, शान्ति-पुष्टि कर्म या विजयलाभ हेतु शुद्ध घृत में कुछ केसर के धागे या अक्षत रखकर दीपक प्रज्जवलित करें। दीपक का निर्माण आटे से भी किया जा सकता है। अगर दीपक की संख्या अधिक है तो मिट्टी के दीपक का प्रयोग भी किया जा सकता है। मिट्टी के दीपक पंचतत्त्वों का विकास करते हैं। इनका प्रयोग प्रत्येक पूजन या अनुष्ठान में किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त धातुओं में स्वर्ण एवं रजत के दीपक धनैश्वर्य प्रदाता हैं। कांसे के दीपक सभी प्रकार के दोष समाप्त करते हैं। पीतल के दीपक आर्थिक सम्पन्नता प्रदान करते हैं। लोहे के दीपक ग्रहशान्ति, शत्रुनाश एवं मारणादि कर्म में प्रयोगनीय हैं और तांबे के दीपक से आध्यात्मिक एवं बुद्धि लाभ होता है। ग्रहमन्दिर या देवालय में इसे सरलता से सम्पन्न किया जा सकता है। तंत्रोक्त विधान में अगर सम्भव हो तो श्मशान में बलि प्रदान करते हुए इस कर्म का सम्पादन करना चाहिये।

गुरु से समस्त यम नियमों को ग्रहण कर देवता की प्रारम्भिक पूजा करें। कार्यसिद्धि के अनुसार दीपदान के साथ मंत्र का जप भी करें। 11 या 21 दीपक किसी पात्र में अर्पित किये जा सकते हैं। अधिक संख्या में दीपक हो तो भूमि को शुद्धादि कर, भूमि पूजन कर वहां दीपक स्थापित कर प्रज्ज्वलित करें। दीपक प्रज्ज्वलित करते समय मूल मंत्र या 'ॐ भैरवाय नमः' मंत्र का जप करते रहें। स्नानादि से पवित्र होकर रात्रिकाल एकान्त व पवित्र स्थान में यह दीपदान प्रयोग करना चाहिये। अन्त में अपने दाहिने हाथ से धूप एवं दीपक देवता को दिखाते हुए समर्पण मंत्र बोलें- 'एतत् अमुक संख्या दीप पात्रं मम अमुक कामना सिद्ध्यर्थे अमुक देवता प्रीत्यर्थे दर्शयामि समर्पयामी निवेदयामि।' आरती व क्षमायाचना सबसे आखिर में करें।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana